meceÙe eueKeiee Gvekeâ Yee DeHejeOe

कहीं आत्मविश्लेषण तो कहीं जश्न का दौर। समर में दिग्गजों ने खुदको साबित करने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाएं। इन सभी के बीच शिवराज की दबंग कार्यप्रणाली ने मध्यप्रदेश में लोहा मनवा लिया। भाजपा का मध्यप्रदेश में बढ़त का सबसे बड़ा कारण शिवराज का विकास की लहर लाना भी है। दूसरे प्रदेशों या राजधानी की बात करे तो अपनी खास छवि रखने वाले उम्मीदवार जीते। राजस्थान में महारानी के सिहासन को आखिरकार हिला ही दिया गया। इंदौर में दो भाइयों की जीत का जश्न शहर ने एक रात पहले से ही मना लिया। दोस्ती में क्षेत्र बदलने की मिसाल कायम करने वाले विजयवर्गीय व मैंदोला की जीत शुरू से ही तय मानी जा रही थी। सट्टा बाजार के साथ लोगो में भी जीत की शर्तें आम थी। इंदौर ने पहले से ही अपने उम्मीदवारों का सम्मान कर दिया। पानी वाले बाबा कहे जाने वाले अश्विन जोशी को इलेक्शन कमीशन की शरण में जाना पड़ा। यही हाल धार जिले में हुआ। रीकाउंटिंग में मात्र दो वोट से उम्मीदवार ने बढ़त हासिल कर ली।

✍ उत्तम झंवर

वहीं रतलाम आदि क्षेत्रों में पार्टी के बजाए छवि महत्वपूर्ण रही। हिम्मत कोठारी शहर को कुछ खास नहीं दे पाए तो शहर ने उन्हें नकार दिया। बड़ा नाम रखने वाले कैलाश चावला को आपसी द्वेष ने हरा दिया। बना को जिताने के बजाए कैलाश को हराने के लिए कई लोगों ने पानी की तरह पैसा बहाया। इस बार प्रत्याशियों की इमेज काफी महत्वपूर्ण रही। शीला दीक्षित की सॉलिड इमेज को न पार्टी न उम्मीदवार कोई नही हिला पाया। खैर समर के बाद अब मैं तो यही कहना होगा कि सियासतदार भी अपने भविष्य को संवारने के लिए अब ग्राउंड लेवल पर काम करना शुरू कर लें। अन्यथा बदलाव की चाह रखने और मुंबई की घटना से आहत लोग अब अपने अधिकारों के लिए सडक पर उतरने में भी परहेज नहीं करेंगें। या दिनकर की पंक्तियों में यूं कहें-

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याघ्र
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।

eMeJe keâ jepe hej eHeâj eJeÕeeme keâe ceenj

मध्यप्रदेश में सभी सर्वेक्षणों और अनुमानों को धता बताते हुए पूर्ण बहुमत के बाद भारतीय जनता पार्टी दोबारा सत्तारूढ़ हो रही है. भाजपा ने 144 सीटें जीत कर पूर्ण बहुमत प्राप्त कर लिया है. हालांकि 2003 के चुनाव से यह कुछ कम है बावजूद इसके भाजपा की पुनः सरकार बनाने की इस सफलता ने इस मिथक को भी तोड़ दिया है कि मध्यप्रदेश में भाजपा लगातार दूसरी बार सत्तारुढ़ नहीं हो सकती. कांग्रेस ने हालांकि अपनी सीटें बढ़ाई है लेकिन वह सत्ता से कोसों दूर है. भाजपा को मिला बहुमत शिवराजसिंह के काम करने के तरीके ओर मध्यप्रदेश में विकास के वादे को मिला है.

मध्यप्रदेश विधानसभा के नतीजे इस बात के गवाह है कि इस चुनाव में नेता की जीत हुई है तथा मैनेजर चुनाव हार गया है. मध्यप्रदेश में भाजपा की सरकार को कायम रखने में शिवराजसिंह की मेहनत और जनता में बनाई पैठ ही मुख्य कारण रहा है. भाजपा की जीत के पीछे पार्टी की लहर के बजाय उसके नेता की लहर ही प्रमुख कारण रहा है. इस चुनाव में उमा भारती का क्रेज भी खत्म कर दिया है. उमा भारती ऐसा कोई जादू नहीं दिखा पाई जो भाजपा की हार का कारण बनता दिखाई दें. गौरतलब है कि उमा ने भाजपा को हराने की सौगंध खाई थी लेकिन वह इसमें सफल नहीं हो पाई. उमा फैक्टर ने मध्यप्रदेश के चुनाव नतीजों को आंशिक रूप से भी प्रभावित नहीं किया जबकि बसपा का जादू ऐसा चला कि उसने कई सीटों पर कांग्रेस के लिये न केवल मुसीबत खड़ी की बल्कि अपना

जनाधार भी साबित किया. मध्यप्रदेश कांग्रेस ने जनाधार विहिन सुरेश पचौरी को इस चुनाव की कमान सौंपी थी. वे पूरी कांग्रेस को न तो एकजुट कर पाए और न ही कांग्रेस कार्यकर्ताओं में यह विश्वास कर पाए कि कांग्रेस चुनाव जीत भी सकती है. नतीजा यह हुआ कि कांग्रेस के सभी क्षत्रप जिनमें ज्योतिरादित्य सिंधिया से लेकर अजय सिंह तक और कमलनाथ से लेकर दिग्विजयसिंह तक सभी अपने-अपने प्रत्याशियों को जिताने में लगे रहे. परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस के कई दिग्गजों को चुनाव में पराजय का मुंह देखना पड़ा.

निमाड़ अंचल में अभी तक कांग्रेस के क्षत्रप के रूप सुभाष यादव की पहचान थी लेकिन वे अपने प्रत्याशियों को जिताना तो दूर खुद अपनी कसरावद सीट भी नहीं बचा पाए. धार जिले में नेता प्रतिपक्ष जमुना देवी बमुश्किल खुद जीत पाई और गंदवानी से अपने भतीजे उमंग सिंगार को जीता पाई लेकिन जिले की अन्य सीटों पर उनका करिश्मा नहीं चल पाया. झाबुआ में जरूर केन्द्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया पांच में चार सीटों को कांग्रेस की झोली में डाल पाए. यूं देखा जाए तो पचौरी ने पूरे चुनाव में एक अच्छे मैनेजर की भूमिका निभाई बजाय सेनापति बनने के और इसी कारण कांग्रेस के पक्ष में माहौल होने के बावजूद वे पौधे से वटवृक्ष बने शिवराजसिंह को शिकस्त नहीं दे पाए. कांग्रेस की सीटें बढ़ना भी कोई पचौरी के नेतृत्व का जादू नहीं है बल्कि भाजपा के आरोपों से घिरे मंत्रियों के कारण ही कांग्रेस अपनी सीटें बढ़ा पाई है. कुल मिलाकर मध्यप्रदेश के चुनाव नतीजे इस बात के गवाह बने हैं कि मध्यप्रदेश में जनता एक बार फिर शिवराजसिंह को मुख्यमंत्री के रूप में देखना चाहती थी.

ØeelekeâueleeDee keâ yeeo Yee keâe«eme ve meeš ye{eF

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा के चुनावों में विजय हासिल करके भारतीय जनता पार्टी ने सत्ता में वापसी सुनिश्चित कर ली है लेकिन यहां इस तथ्य का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। लगभग बिखरी और बिना किसी मजबूत प्रदेश स्तरीय नेता के भी कांग्रेस ने विधानसभा में अपनी स्थिति पिछली विधानसभा की तुलना में बेहतर कर ली है। ऐसी स्थिति में सदन में अब माहौल हकतरफा नहीं दिखाई देगा। मध्यप्रदेश विधानसभा चुनावों के परिणामों के अनुसर भारतीय जनता पार्टी पूर्व की तुलना में काफी नुकसान के बावजूद सत्ता में अपनी पार्टी की वापसी सुनिश्चित करने में कामयाब हुई है। इस सफलता के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की कड़ी मेहनत, बेहतर चुनाव एवं मीडिया प्रबंधन माना जा रहा है। राजनीतिक क्षेत्रों में कहा जा रहा है कि जिस तरह से भाजपा

छत्तीसगढ़ में चला रमन सिंह का जादू

सरकार की उपब्धियों का प्रचार किया गया था उससे भाजपा को प्राप्त सीटों को तौलने पर असंतुलन सा दिखता है। दूसरी ओर अत्यधिक सीमित संसाधनों, बिखराव और सशक्त प्रादेशिक नेतृत्व के अभाव के बावजूद कांग्रेस अपनी सीटें बढ़ाने में कामयाब हो गई। यदि कांग्रेस अच्छी रणनीति, आपसी तालमेल से मैदान में उतरती तो उसकी स्थिति बेहतर हो सकती थी। दूसरी ओर छतीसगढ़ में भी भाजपा की सत्ता में पुनः वापसी हो रही है। वहां भाजपा उसकी वापसी किसी बड़े नुकसान के बगैर हुई है। ऐसा माना जा रहा है कि छत्तीसगढ़ में भाजपा से कहीं अधिक यह मुख्यमंत्री रमन सिंह की विजय है। तीन रुपये प्रतिकिलो चावल और 25 पैसे प्रतिकिलो की दर से नमक उपलब्ध करवा कर रमन सिंह ने मतदाताओं पर ऐसा जादुई प्रभाव डाला कि उनकी लोकप्रियता के सामने प्रतिद्वंदी फीके नजर आने लगे।

meòee Deej meie"ve keâ mecevJeÙe keâe peele

म.प्र. में किस समीकरण से शिवराजसिंह चौहान वापस सत्ता में लौट रहे हैं, यह कयास लगाये जा लगे हैं. इसलिये भी कि राजस्थान में वसुंधरा राजे सिंधिया और छत्तीसगढ़ में रमनसिंह के लिये वैसी स्थितियां नहीं बनी. क्या शिवराजसिंह का विकास का मुद्दा राजस्थान और छत्तीसगढ़ की सरकारों के काम पर भारी था या कुछ और था. यह सवाल अब न केवल राजनैतिक हलकों में बल्कि भाजपा के भीतर भी जीत-हार के मंथन के समय खंगाला जाएगा. हालांकि भाजपा छत्तीसगढ़ में फिर सरकार बनाने की स्थिति में पहुंच गई है और राजस्थान में दरवाजे के बाहर ही रोक दी गई है. ताजे-ताजे चुनाव परिणामों पर समीकरण की बात फिलवक्त मध्यप्रदेश की ही करें तो जाहिर है भाजपा से यहां शिवराज को अपने चुनाव केम्पेन में प्रोजेक्ट करते हुए फिर भाजपा फिर शिवराज का नारा बुलंद किया था. इसका यह परिणाम दिखने लगा था कि दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में यह लहर चलने लगी थी कि फिर शिवराज चाहिए. कांग्रेस यहां प्रत्याशियों की लड़ाई में इतनी उलझ गई कि वह सत्ता विरोधी फेक्टर तैयार नहीं कर सकी. संगठन में बैठे बड़े नेता सिर्फ बयान देते नजर आए लेकिन सुरेश पचौरी का साथ निभाते कोई नजर नहीं आया. नतीजा यह रहा कि उसके निमाड़ी कद्दावर नेता

विशेष टिप्पणी
सुरेन्द्र बंसल

सुभाष यादव न केवल चुनाव हारे वरन् बीस हजार से ज्यादा मतों से पराजित हो गये. हालांकि भाजपा के भी बड़े और मंत्री स्तर के कुछ नेता जिनमें हिम्मत कोठारी, गौरी शंकर शेजवार और उमा शंकर गुप्ता शामिल है. जनता द्वारा नकार दिये गये. वहीं दागदार मंत्री कमल पटेल, हरजेन्द्र सिंह बब्बू और तुकोजीराव पंवार फिर चुनाव जीत गये.

जाहिर है कि कोई दलगत मुद्दा जनता में नहीं बना था. भाजपा यहां अकेले शिवराज के बूते चुनाव नहीं जीती उनके साथ संगठन का श्रेष्ठ समन्वय था. भाजपा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने संगठन को मुस्तैद रखा और शिवराजसिंह ने सत्ता के बूते प्रभाव जमा रखा. इन दोनों के समन्वय से भाजपा म.प्र. की वह गत नहीं बनी जो राजस्थान या छत्तीसगढ़ में हुई. कांग्रेस इस स्थिति में सामना इसलिये नहीं कर पाई कि वह पूरी ताकत से चुनाव नहीं लड़ी. जहां कहीं कांग्रेस को जीत मिली है वे अधिसंख्य कांग्रेस के परंपरागत इलाके हैं. कांग्रेस के इन अभेद्य दुर्ग को भाजपा भी नहीं भेद पाई. ऐसे में कांग्रेस यदि म.प्र. में पूरी ताकत से नियोजित ढंग से चुनाव लड़ती तो यहां भी भाजपा को पसीने आ सकते थे. बहरहाल भाजपा की यह जीत सत्ता और संगठन के समन्वय की जीत है.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८